फरीदाबाद
# मजदूर समाचार
राहें तलाशने-बनाने के लिए मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया
नई सीरीज नम्बर 209 नवम्बर 2005

**कहत कबीर**
मण्डी का बढता दबदबा हर व्यक्ति को बम में बदल रहा है। बम बनी कोई भी आत्मघात कर सकती है, बम बना कोई भी ताण्डव मचा सकता है।

# दिल्ली में मजदूरों के गत्ते

✶ समस्यायें इतनी बढ गई हैं और स्वयं को इतना कमजोर पाते हैं कि अक्सर चमत्कार में ही आस नजर आती है। मत्था टेकने में हम ने किसी प्रकार की कमी नहीं छोड़ी है। सब शक्तियों के चमत्कारों के बावजूद हमारी समस्यायें बढती ही जा रही हैं।

✶ परेशानियाँ इस कदर बढ गई हैं कि हमें तत्काल समाधान चाहियें। इन्तजार अपने बस से बाहर लगता है। चुटकी बजा कर परेशानी दूर करने वालों को ढूँढने में हम ने किसी प्रकार की कमी नहीं छोड़ी है। अनेकानेक मसीहाओं को आजमाने में हम ने कोई कँजूसी नहीं बरती है। नेताओं-पार्टियों-दादाओं-सिद्धों की चुटकियों और गर्जन को हम ने हमारी परेशानियाँ बढाने वाली ही पाया है।

क्या करें ? कहाँ जायें ? हताशा-निराशा में अपने-अपने में सिमटते हैं और समस्याओं-परेशानियों को बढते पाते हैं। मन नहीं करता, मस्तिष्क मना करता है फिर भी मजार और मसीहा के फेरे लगाना ही अक्सर नजर आता है। इस चक्रव्यूह में एक दरार डालने का प्रयास लगता है **माइकल आराम एक्सपोर्ट मजदूरों** द्वारा दिल्ली में गत्ते ले कर अन्य मजदूरों के बीच जाना, आम लोगों के बीच खड़े होना। सौ मज़दूरों को प्रतिनिधियों/नेताओं के जरिये पाँच में बदल कर मुट्ठी में रखने की परिपाटी को चुनौती है 10 का 100-1000-10,000-...... बनने की राह।

● अन्य समूहों की ही तरह माइकल आराम ग्रुप ने भी कई नाम से कम्पनी बनाई हैं — वर्ल्डली गुड्स, माइकल आराम एक्सपोर्ट, अलकेमिस्ट, माइकल आराम डिजाइन। अन्य फैक्ट्रियों की ही तरह माइकल आराम ग्रुप की फैक्ट्रियों में भी 12 घण्टे की शिफ्ट, ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से, सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन भी नहीं देना, स्थाई काम के लिये वरकर को कैजुअल रखना-ठेकेदार के जरिये रखना, अधिकतर मजदूरों की ई.एस.आई. व पी.एफ. नहीं, पीने के पानी का प्रबन्ध नहीं, लैट्रीन-बाथरूम की समस्या, मैनेजमेन्ट के चमचे-कड़छे, पुराने मजदूरों को भयभीत रखने के लिये एक फैक्ट्री बन्द कर दूसरी नई फैक्ट्री खोलना, कम्पनी की फैक्ट्रियों से बाहर भी उत्पादन करवाना......

● अन्य फैक्ट्रियों के मजदूरों की ही तरह माइकल आराम ग्रुप की फैक्ट्रियों में भी समस्याओं-परेशानियों से मजदूर जूझते रहे हैं, जूझ रहे हैं :

— धातु की सजावटी और उपयोग के लिये महँगी कलात्मक वस्तुओं का उत्पादन करते माइकल आराम ग्रुप का मुख्यालय अमरीका में है और दिल्ली में लाडो सराय, किशनगढ व ओखला तथा गाजियाबाद में साहिबाबाद आदि स्थानों पर ग्रुप की अपनी फैक्ट्रियाँ रही हैं और बाहर से भी उत्पादन करवाया जाता है। धातु को चमकाना गन्दा, कठिन व खतरनाक काम है। कलात्मक वस्तुओं को चमकाना बहुत जटिल काम भी है। स्टील की वस्तुओं को चमकाना बहुत मेहनत भी माँगता है। ओखला फेज-I में बी-156 डी.डी.ए. शैड्स स्थित माइकल आराम एक्सपोर्ट फैक्ट्री में तीन-चार साल पहले मजदूर घुटन-भरे माहौल में स्टील की वस्तुओं पर पॉलिश करने के लिये रखे गये।

— दुनियाँ को बाँधे तथा बीन्ध रहे मण्डी-मुद्रा के पुर्जेनुमा जोड़-तालमेल फैक्ट्री समाज में और भी वीभत्स रूप में मौजूद रहते हैं। डर-लालच-जाति-धर्म-क्षेत्र-ईर्ष्या-पीठ थपथपाना आदि को बी-156 में मैनेजर और सुपरवाइजर ने मजदूरों के खिलाफ बखूबी इस्तेमाल किया। उत्पादन बढाने के संग क्वालिटी बढाई गई और मजदूरों के बीच क्लेश व दूरियाँ बढी। लेकिन कई जगह यही सब भुगत कर माइकल आराम एक्सपोर्ट फैक्ट्री पहुँचे मजदूरों ने अपने बीच पुर्जेनुमा जोड़ों को चुनौती देने वाले समुदाय-रूपी जोड़-तालमेल बनाने शुरू किये।

— **परस्पर शक और शंका के बावजूद एक साथ बैठ कर बातें करने के सिलसिले ने मजदूरों के बीच कटुता-कड़वाहट को कम करना शुरू किया। पुर्जों की जगह मनुष्य बनते मजदूरों के सहज-सरल तालमेल बी-156 फैक्ट्री में चमत्कार करने लगे। दिल्ली सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन कम्पनी को देना पड़ा। ई.एस.आई. और पी.एफ. लागू करने पड़े। स्थाई मजदूरों के तौर पर कम्पनी को उन्हें स्वीकारना पड़ा।**

— नियन्त्रण से बाहर जा रहे मजदूरों को फिर अपनी मुट्ठी में लेने के लिये मैनेजमेन्ट की हरकतें दिन-ब-दिन बढने लगी। समुदाय-रूपी अपने तालमेलों पर मजदूरों का भरोसा डगमगाया और अपनी सुरक्षा के लिये इफ्टू यूनियन के सदस्य बने।

— अगस्त 04 में एक दिन अचानक कम्पनी ने 4 मजदूरों को नौकरी से निकालने का नोटिस लगा कर सब मजदूरों पर हमला बोला। श्रम विभाग में इफ्टू यूनियन की ईमानदार कार्रवाई से मजदूरों को काफी राहत मिली लेकिन यूनियन के बाकी तौर-तरीके मजदूरों को रास नहीं आये। कम्पनी ने अपने जालों में फँसा कर 28 मजदूरों से इस्तीफे लिखवा लिये और 25 वरकर ही अपनी नौकरी बरकरार रख सके। यूनियन के सदस्य बनने के बाद भी मजदूरों ने एक साथ बैठ कर बातें करने का सिलसिला जारी रखा था। इस अनुभव ने बी-156 के मजदूरों के बीच समुदाय-रूपी जोड़-तालमेल के महत्व के अहसास को बढाया।

— कम्पनी के डायरेक्टरों के बीच झगड़ा बढा। साहबों ने घोटाला, हेराफेरी के आरोप एक-दूसरे पर लगाये। कम्पनी ने मार्च 05 में अलकेमिस्ट और माइकल आराम एक्सपोर्ट की ओखला फेज-I में बी-156 व सी-82 तथा गाजियाबाद वाली फैक्ट्री के मजदूरों को खाली बैठाना शुरू कर दिया।

— मई 05 में सी-109 ओखला फेज-I में **माइकल आराम डिजाइन** के नाम से नई कम्पनी शुरू कर दी गई। खाली बैठाना आरम्भ करने के समय बड़े साहब ने दो हफ्ते में काम देने का आश्वासन दिया था लेकिन फिर इस्तीफे लिख कर नई फैक्ट्री में नये सिरे से भर्ती की बातें होने लगी। डर और लालच में 35-40 स्थाई मजदूर आये। पुरानों की नई भर्ती के संग नयों की भर्ती से माइकल आराम डिजाइन में मजदूरों की सँख्या 140 हो गई। रात को ठेकेदार के जरिये वरकर रख कर नई फैक्ट्री में चोरी-छिपे भी काम करवाया गया। **(बाकी पेज चार पर)**

मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन. आई. टी. फरीदाबाद—121001 (यह जगह बाटा चौक और मुजेसर के बीच गंदे नाले की बगल में है।)

# कानून हैं शोषण के लिये और छूट है कानून से परे शोषण की

*हरियाणा सरकार द्वारा निर्धारित कम से कम तनखा अकुशल मजदूर- हैल्पर के लिये 8 घण्टे की ड्युटी और महीने में 4 छुट्टी पर जुलाई 05 से 2360 रुपये है।*

**विजय इंजिनियर्स मजदूर :** "प्लॉट 165-6 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में ई.एस.आई. कार्ड 35 स्थाई मजदूरों को ही दिये हैं। 75-80 कैजुअल वरकरों की तनखा 2000-2200 रुपये। डेली वेज के नाम पर रखे 400 मजदूरों को 75 रुपये रोज के हिसाब से तनखा महीने पर ही देते हैं। चोट लगने पर इलाज करवाने की बजाय कम्पनी नौकरी से निकाल देती है। लगातार खड़े-खड़े काम करना पड़ता है। तनखा 18 तारीख के बाद।"

**एम.वी. इंजिनियरिंग वरकर :** "10ए/5-6 संजय कॉलोनी, सैक्टर-23 स्थित फैक्ट्री में हैल्पर की तनखा 1700 और ऑपरेटर की 2200 रुपये। पावर प्रेस का काम है — हाथ कटने के बाद ई.एस.आई. लागू करते हैं।"

**फरीदाबाद बोल्ट टाइट मजदूर :** "77 सै.-6 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 1600- 1700 रुपये। फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं — ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। ज्यादातर वरकर ठेकेदार के जरिये रखे हैं— ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। साहब गाली देते हैं।"

**नूकेम मशीन टूल्स वरकर :** "20/6 मथुरा रोड स्थित फैक्ट्री में हमारी 17 महीनों की तनखायें बकाया हो गई हैं। कम्पनी ने अप्रैल 04 की तनखा 14 सितम्बर 05 को दी और उसके बाद आज 18 अक्टूबर तक कोई तनखा नहीं दी है। फैक्ट्री में उत्पादन कार्य जारी है।"

**चाँद इन्डस्ट्रीज मजदूर :** "7 बी एन.एच. 1 स्थित फैक्ट्री में हमें सितम्बर की तनखा आज 21 अक्टूबर तक नहीं दी है।"

**मोहता ब्राइट स्टील वरकर :** "प्लॉट 258 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में कैजुअल वरकरों को 1600-1700 रुपये 30 दिन के— ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। स्थाई मजदूरों को ई.एस.आई. व पी.एफ. काट कर महीने के 1800 रुपये।"

**सेक्युरिटी गार्ड :** "कोठी नम्बर 51 सैक्टर-4 आर स्थित कार्यालय वाली **गार्ड सेक्युरिटी सर्विस** 12 घण्टे रोज ड्युटी पर गार्ड को महीने के 1800 रुपये देती है। ई.एस.आई. कार्ड नहीं, पी.एफ. में हेराफरी। भर्ती के समय कोरे कागजों पर हस्ताक्षर करवाते हैं।"

**सी.एम.आई. मजदूर :** "प्लॉट 71 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में जुलाई, अगस्त और सितम्बर की तनखायें आज 18 अक्टूबर तक हमें नहीं दी हैं।"

**वीनस शीट मैटल वरकर :** "प्लॉट 10 गली 1 सैक्टर-25 स्थित फैक्ट्री में हैल्पर की तनखा 1400 और ऑपरेटरों की 1800-2500 रुपये। ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं।"

**ग्लोब हाई-फैब्स मजदूर :** "14/1 मथुरा रोड स्थित फैक्ट्री में ठेकेदार के जरिये रखे वरकरों की तनखा 1800-2300 रुपये — ई.एस. आई. नहीं, पी.एफ. नहीं।"

**एच.जे. इंजिनियरिंग वरकर :** "प्लॉट 352 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में हैल्पर की तनखा 1600 रुपये। कम्पनी ने अगस्त और सितम्बर की तनखायें आज 15 अक्टूबर तक नहीं दी हैं।"

**नूकेम केमिकल डिविजन मजदूर :** "54 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में सितम्बर की तनखा 18 अक्टूबर को देने का नोटिस कम्पनी ने फैक्ट्री में लगाया था पर आज 21 अक्टूबर तक भी सितम्बर की तनखा हमें नहीं दी है।"

**वीगो हैड वरकर :** "प्लॉट 38 सैक्टर-4 स्थित फैक्ट्री में हैल्पर की तनखा 1400 रुपये — ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। कम्पनी 18 तारीख के बाद ही तनखा देती है।"

**प्रेम मेक मजदूर :** "प्लॉट 9 डी सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में सिर्फ 5 स्थाई मजदूरों की ही ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं — 120 कैजुअल वरकरों की नहीं हैं। ड्युटी 10-12-18 घण्टे — ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। भारी प्रेसों का काम है — हाथ कटते रहते हैं। फैक्ट्री में पीने के पानी का प्रबन्ध नहीं और लैट्रीन में सफाई नहीं।"

**सुरभि इंजिनियरिंग वरकर :** "प्लॉट 318 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में दो ठेकेदारों के जरिये रखे 100 वरकरों की तनखा 1400 रुपये — ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। शिफ्ट 12 घण्टे की, ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से।"

**पी.सी. कास्टिंग मजदूर :** "सैक्टर-31 स्थित फैक्ट्री में काम करते 100 मजदूरों में 8-9 स्थाई हैं और बाकी को चार ठेकेदारों के जरिये रखा है। पीस रेट पर काम करवाते हैं और इस समय काम ढीला होने से महीने के 1500-1600 रुपये ही पड़ते हैं — ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं।"

**सुपर लिस्ट मोटो वरकर :** "2 सैक्टर-4 स्थित फैक्ट्री में हैल्पर की तनखा 1500 रुपये।"

**ए.बी.एल. मजदूर :** "प्लॉट 9 सैक्टर-56 (कृष्णा कॉलोनी) स्थित फैक्ट्री में 20-25 स्थाई, 25 कैजुअल और तीन ठेकेदारों के जरिये रखे 50 वरकर प्रतिदिन 12½ घण्टे ड्युटी करते हैं — ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। हैल्पर की तनखा 1800 रुपये — ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। सितम्बर का वेतन आज 15 अक्टूबर तक हमें नहीं दिया है— सेक्युरिटी गार्डों को तो अगस्त और सितम्बर की तनखायें अभी नहीं दी हैं।"

**एस.जी. इन्डस्ट्रीज वरकर :** "15 संजय कॉलोनी, सैक्टर-23 स्थित फैक्ट्री में हैल्पर की तनखा 2000 रुपये — ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं — ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से।"

**दाउजी इंजिनियरिंग मजदूर :** "प्लॉट 151 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में हैल्पर की तनखा 1700 रुपये। वेतन के लिये मज़दूर काम बन्द कर देते हैं तब कम्पनी 20 तारीख को तनखा देती है।"

**सिफ्टर इन्टरनेशनल वरकर :** "प्लॉट 105 सैक्टर-25 स्थित फैक्ट्री में ठेकेदार के जरिये रखे हैल्पर की तनखा 1500 रुपये — ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं।"

**श्याम टैक्स इन्टरनेशनल मजदूर** "प्लॉट 4 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में सितम्बर की तनखा हमें आज 18 अक्टूबर तक नहीं दी है।"

**इन्टरनेशनल फोरजिंग वरकर :** "प्लॉट 196 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में 12 घण्टे प्रतिदिन काम पर हैल्पर को महीने के 2200 रुपये देते हैं — ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं।"

**कन्डोर पावर प्रोडक्ट्स मजदूर :** "प्लॉट 22 सैक्टर-4 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 1400-1800 रुपये। अगस्त और सितम्बर की तनखायें आज 18 अक्टूबर तक हमें नहीं दी हैं।"

**एस.पी.एल. वरकर :** "प्लॉट 22 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में ठेकेदारों के जरिये रखे गये हम मजदूरों को सितम्बर का वेतन आज 18 अक्टूबर तक नहीं दिया है।"

**अनुपम एक्सपोर्ट मजदूर :** "प्लॉट 69 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 1200-1300 और ऑपरेटरों की 2000 रुपये। ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। तीसों दिन फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट — ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। सितम्बर का वेतन 16 अक्टूबर तक नहीं। फैक्ट्री में 150 मजदूर काम करते हैं और पीने के पानी का प्रबन्ध नहीं है, पेशाब करने बाहर जाना पड़ता है — मैनेजमेन्ट दिवाली बाद लैट्रीन बनाने की बात करती है।"

***मजदूर समाचार में साझेदारी के लिये :***

*★ अपने अनुभव व विचार इसमें छपवा कर चर्चाओं को कुछ और बढवाइये। नाम नहीं बताये जाते और अपनी बातें छपवाने के कोई पैसे नहीं लगते। ★ बाँटने के लिये सड़क पर खड़ा होना जरुरी नहीं है। दोस्तों को पढवाने के लिये जितनी प्रतियाँ चाहियें उतनी मज़दूर लाइब्रेरी से हर महीने 10 तारीख के बाद ले जाइये। ★ बाँटने वाले फ्री में यह करते हैं। सड़क पर मजदूर समाचार लेते समय इच्छा हो तो बेझिझक पैसे दे सकते हैं। रुपये- पैसे की दिक्कत है।*

*महीने में एक बार छापते हैं, 5000 प्रतियाँ फ्री बाँटते हैं। मजदूर समाचार में आपको कोई बात गलत लगे तो हमें अवश्य बतायें, अन्यथा भी चर्चाओं के लिए समय निकालें।*

# भेदभाव-हेराफेरी-थोथे आश्वासन

**जी.ई. मोटर मजदूर :** "सैक्टर- 11 स्थित फैक्ट्री में प्रोविडेन्ट फण्ड निकलवाने के लिये फार्म भरने के ठेकेदार 100 रुपये रिश्वत लेते हैं। ठेकेदार के जरिये रखे हम वरकरों से तनखा के मामले में तो दुर्गत की ही जाती है, कैन्टीन में भी कम्पनी भेदभाव बरतती है — स्थाई मजदूरों और ठेकेदार के जरिये रखे मजदूरों के लिये रेट अलग-अलग हैं। अधिकारी हमें डाँटते- फटकारते- धमकाते- गाली देते हैं।"

**साधु ओवरसीज वरकर :** "प्लॉट 127 सैक्टर- 24 स्थित फैक्ट्री में 12- 12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं और 12 घण्टे बाद भी जबरन रोक लेते हैं। एक कप चाय तक कम्पनी 12 घण्टे में नहीं देती पर उसके बाद रोकने पर भोजन के लिये 20 रुपये देती थी लेकिन अगस्त से यह 20 रुपये भी देने बन्द कर दिये हैं। त्यौहारी छुट्टी पर भी काम पर बुला लेते हैं और नहीं जाओ तो गेट बाहर कर देते हैं — रक्षाबन्धन की छुट्टी वाले दिन काम पर नहीं आने के लिये अगले रोज मैनेजमेन्ट ने सी एन सी विभाग की पूरी शिफ्ट को 4 घण्टे गेट के बाहर रखा। ओवर टाइम के पैसे कम्पनी सिंगल रेट से देती है। फैक्ट्री में निर्यात के लिये वायुयान और समुद्री जहाज के पुर्जे बनते हैं — पीस रिजेक्ट होने पर कम्पनी तनखा में से 200- 700 रुपये काट लेती है। कार्य के दौरान औजार खराब होने पर तनखा से 1000 रुपये तक काटे हैं। साहब लोग गाली देते हैं, एक हैल्पर को मार भी दिया। वर्दी- जूते कम्पनी देती नहीं पर चप्पल पहन कर आने पर गेट रोक देती है। फैक्ट्री में कार्य के दौरान हाथ कट जाने पर मैनेजमेन्ट एक्सीडेन्ट रिपोर्ट नहीं बनाती — ई.एस.आई. वाले रिपोर्ट माँगते हैं पर कम्पनी बनाती ही नहीं। ई.एस.आई. व पी.एफ. दिसम्बर 04 से शुरू किये हैं — पहले थे ही नहीं। दस साल के दौरान वार्षिक बोनस कम्पनी ने कभी दिया ही नहीं है।"

**सुपर ऑटो मजदूर :** "प्लॉट 50,80, 86 सैक्टर- 6 स्थित कम्पनी की फैक्ट्रियों में 1200 के करीब वरकर काम करते हैं पर ई.एस.आई. व पी.एफ. लगभग 100 के ही हैं। कम्पनी ने 25- 30 पुराने मजदूरों को ठेकेदार बना कर प्रत्येक के जरिये 25- 30 वरकर रखे हैं। हैल्परों की तनखा 1500- 1600 और ऑपरेटरों की 2000- 2200 रुपये। फैक्ट्रियों में 12- 12 घण्टों की दो शिफ्ट हैं और तीसों दिन काम करना पड़ता है— ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। हर महीने रिकार्ड जला देते हैं।"

**शिवालिक ग्लोबल वरकर :** "12/6 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में मैनेजमेन्ट ने 30 सितम्बर को 15- 20 मजदूरों का गेट रोका। इस पर उन मजदूरों ने अपना हिसाब माँगा तो साहब बोले कि इस्तीफे दो तब देंगे। वरकरों ने 1 अक्टूबर को त्यागपत्र दे दिये पर फिर भी आज 17 अक्टूबर तक कम्पनी ने उन्हें उनके पैसे नहीं दिये हैं। फैक्ट्री में सितम्बर की तनखा भी आज तक नहीं दी है। सुपरवाइजर बहुत गाली देते हैं।"

**ग्लोब कैपेसिटर मजदूर :** "कम्पनी की 22 बी और 30/8 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्रियों में ड्युटी 10½ घण्टे की है — सुबह 8 से साँय 6½ बजे तक, परन्तु अधिकारी जिस दिन जाँच के लिये आते हैं उस रोज कम्पनी साँय 4½ बजे छुट्टी कर देती है। हैल्पर को 8½ घण्टे के 60 रुपये के हिसाब से महीने के पैसे देते हैं। साप्ताहिक छुट्टी नहीं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से।"

**ए जी आई स्विचगियर वरकर :** "प्लॉट 129 सैक्टर- 24 स्थित फैक्ट्री में 150 मजदूर काम करते थे, अब 15- 20 ही हैं। जब 9 महीनों की तनखायें बकाया हो गई तब तीन वर्ष पहले मैंने नौकरी छोड़ी थी। फैक्ट्री में जब वेतन देते हैं तब मुझे भी 500 रुपये देते हैं — मेरे 2500 रुपये अभी भी कम्पनी पर बकाया हैं और इधर तीन महीनों से कम्पनी ने मजदूरों को तनखा दी ही नहीं है।"

**भाई सुन्दरदास एण्ड कम्पनी मजदूर :** "20/4 मथुरा रोड स्थित फैक्ट्री में भर्ती के लिये 500- 700 रुपये रिश्वत लेना जारी है।"


**डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी,**
**आटोपिन झुग्गी,**
**एन.आई.टी. फरीदाबाद—121001**


# दिल्ली से—

**कानून : ●37- 40 दिन काम करने पर 30 दिन की तनखा, अगले महीने की 7- 10 तारीख तक दे ही देना; ●8 घण्टे की ड्युटी, तीन महीने में 50 घण्टे से ज्यादा ओवर टाइम काम नहीं, ओवर टाइम का भुगतान वेतन की दुगनी दर से; ●अब 8 घण्टे की ड्युटी और साप्ताहिक छुट्टी पर दिल्ली सरकार द्वारा निर्धारित कम से कम तनखा हैल्पर के लिये 3166 रुपये और कारीगर के लिये 3590 रुपये महीना है।**

**आनन्द इन्टरनेशनल मजदूर :** "कम्पनी की ए- 185, ए- 195, डी- 3 और डी- 97 ओखला फेज- I स्थित फैक्ट्रियों में अब तक हम पुरुष व महिला हैल्परों को 12 घण्टे रोज काम पर 26 दिन के जो 2863 रुपये देते थे उन्हें घटा कर 2000 रुपये कर रहे हैं। दिल्ली सरकार ने काफी समय से बकाया महंगाई भत्ते की घोषणा कर डी.ए. के 303 रुपये वेतन में जोड़े हैं और ऐसे में हमारी तनखा बढाने की जगह कम्पनी घटा रही है। साहब कह रहे हैं कि 2863 की जगह 2000 रुपये में काम करना है तो करो अन्यथा नौकरी छोड़ो। सिलाई कारीगरों को कम्पनी अब 15½ की जगह 16 रुपये प्रति घण्टा के हिसाब से पैसे देने लगी है।"

**रामा टैन्ट एण्ड लाइट हाउस वरकर :** "भोगल स्थित कम्पनी में हम 600 मजदूर 2000- 3500 रुपये तनखा में काम करते हैं — ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। काम की कोई सीमा नहीं है — पूरी रात के मात्र 70 रुपये देते हैं। कम्पनी में इतने मजदूर हैं पर शौचालय का प्रबन्ध नहीं किया है। साहब बहुत गालियाँ देता है।"

**बाटक्यू मजदूर :** "4/3 ओखला फेज- II स्थित फैक्ट्री में हैल्पर की तनखा 2000 और कारीगर की 3469 रुपये। फैक्ट्री में लगातार नाइट लगती है और रविवार को भी छुट्टी नहीं — छुट्टी करने पर नौकरी से निकाल देते हैं। ओवर टाइम काम के पैसे सिंगल रेट से देते हैं। एक हजार मजदूरों के लिये मात्र 6 लैट्रीन हैं और टट्टी- पेशाब करने जाने पर अधिकारी डाँटते हैं। ई.एस.आई. व पी.एफ. एक चौथाई मजदूरों के ही हैं। भर्ती के समय कम्पनी दस- बारह जगह हस्ताक्षर करवाती है और जो लिखा होता है उसे पढने नहीं देती। हाजरी कार्ड व पहचान- पत्र नहीं देते और हर महीने रिकार्ड बदल दिया जाता है। लाइन मास्टर हम मजदूरों के साथ बदतमीजी करते हैं।"

**सफाई वरकर :** "नेहरू प्लेस में कार्यालयों और इमारतों की सफाई के लिये हमें ठेकेदारों के जरिये 1800 रुपये तनखा में रखते हैं — ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं।"

**फैशन फैब मजदूर :** "बी- 113 ओखला फेज- I स्थित फैक्ट्री में कम्पनी द्वारा स्वयं भर्ती हैल्पर की तनखा 3300 और कारीगर की 3500 रुपये — कैजुअल वरकर भर्ती करने के लिये अधिकारी 2000 रुपये रिश्वत लेते हैं। ठेकेदार के जरिये रखे जाते हैल्पर की तनखा 1500 रुपये — ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। कम्पनी ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से देती है और सुपरवाइजर गाली देते हैं।"

**सेक्युरिटी गार्ड :** "बी- 74 ओखला फेज- II स्थित कार्यालय वाली **पायल सेक्युरिटी** कम्पनी अपने 500 के करीब गार्डों को 12 घण्टे रोज ड्युटी पर महीने के 2600 रुपये देती है।"

**कॉन्टिनेन्टल मजदूर :** "बी- 66 ओखला फेज- I स्थित फैक्ट्री में ठेकेदार के जरिये रखे हैल्पर को 95 रुपये रोज के हिसाब से तनखा देते हैं — ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं, साप्ताहिक छुट्टी नहीं।"

**एस. के. इम्ब्राइडरी वरकर :** "एफ- 9/3 ओखला फेज- I स्थित फैक्ट्री में 12 घण्टे रोज काम पर हैल्पर को महीने के 1500 रुपये देते हैं — ई.एस.आई. नहीं, पी. एफ. नहीं, साप्ताहिक छुट्टी नहीं।"

# ग्वालियर से —

**सेक्युरिटी गार्ड :** "हम 230 गार्ड 14 साल से **जियाजी विश्वविद्यालय** में 2000- 2500 रुपये प्रतिमाह पर काम कर रहे हैं — प्रोविडेन्ट फण्ड नहीं, स्वास्थ्य का बीमा नहीं। विश्वविद्यालय में सफाई कर्मचारियों, मेस वरकरों, मालियों को 1500- 1800 रुपये महीना ही देते हैं। और, सिर्फ बागवानी पर खर्च के लिये इधर 4 करोड़ रुपये सरकार ने विश्वविद्यालय को दिये हैं।"

## दिल्ली में मजदूरों के गत्ते... (पेज एक का शेष)

बाहर भी उत्पादन करवाया जाता रहा है। निर्यात जारी और बी-156, सी-82 तथा गाजियाबाद फैक्ट्रियों में ड्युटी के दौरान स्थाई मजदूर रोज ठाली।

—खाली बैठाये स्थाई मजदूरों की चाय बन्द की, पानी बन्द किया, बिजली बन्द और तनखा देने में देरी शुरू की। यूनियन ने श्रम विभाग में कार्रवाई की। जुलाई में श्रम विभाग से लौटते समय कार द्वारा साइकिल को टक्कर से माइकल आराम एक्सपोर्ट के एक मजदूर की मृत्यु हो गई। खाली बैठाये मजदूरों को जस-तस तनखा देती कम्पनी इस्तीफों के लिये लगातार दबाव बढाती रही। परेशान हो कर अलकेमिस्ट के मज्दूरों ने इस्तीफे दे दिये। सितम्बर की तनखा 27 अक्टूबर तक नहीं दी तब माइकल आराम एक्सपोर्ट की सी-82 और गाजियाबाद फैक्ट्रियों के अधिकतर मजदूरों ने इस्तीफे दे दिये। श्रम विभाग में कम्पनी ने लिख कर दिया है कि तनखा देने के लिये बैंक खाते में पैसे नहीं हैं पर इस्तीफा लिखने पर मजदूर को चटपट पैसे दे रही है। इन 12-13 महीनों में माइकल आराम ग्रुप 125 स्थाई मजदूरों की नौकरी खा चुका है।

— इस सब के बीच बी-156 के मजदूर अपने समुदाय-रूपी तालमेलों के जरिये डटे हैं। भारी दबावों, बढते दबावों से पार पाने के लिये यह मजदूर 27 अक्टूबर से गत्ते ले कर अन्य मजदूरों के बीच, आम जनता के बीच आये हैं। सुबह की शिफ्टों के समय ओखला औद्योगिक क्षेत्र में आज इस सड़क पर, कल उस सड़क पर गत्ते थामे माइकल आराम एक्सपोर्ट के मजदूर खड़े हो रहे हैं। दिवाली के दिन गत्तों के साथ मजदूर कनॉट प्लेस में....

● गत्तों के जरिये जानकारी फैलती है पर प्रचार नहीं है यह। गत्तों के सामने एकत्र होते, गत्तों पर लिखे को पढते लोगों को गत्तेवाले कोई चीज समझा नहीं रहे। गत्तों के इर्द-गिर्द होती भाँति-भाँति की बातें अनुभवों और विचारों का आदान-प्रदान हैं। इस प्रकार की चर्चायें समुदाय-रूपी जोड़ों-तालमेलों के लिये जमीन तैयार करती हैं जो कि हम पर लदे हिमालयी बोझ से पार पाने के लिये एक अनिवार्य आवश्यकता है। पर बात इतनी ही नहीं है। गत्ते लिये खड़े चन्द मजदूर अन्य मजदूरों के लिये दर्पण बन जाते हैं। गत्तेवाले आईने में "दर्शकों" को अपनी खुद की तस्वीरें नजर आती हैं। गत्तों के जरिये एक फैक्ट्री के चन्द मजदूरों की समस्या-परेशानी बड़ी सँख्या में हलचल पैदा कर अनेकों साहबों की परेशानियाँ बढाती है। गत्ते थामे मजदूरों से कम्पनी-विशेष की बदनामी तो होती ही है पर इस से भी कहीं बहुत ज्यादा दबाव अन्य कम्पनियाँ और साहब लोग कम्पनी-विशेष पर डालते हैं — मामला जल्दी नहीं निपटने पर उन्हें अपना माहौल बिगड़ने का डर सताने लगता है। गत्ते ले कर सड़क पर खड़े होना 10 के 100-1000-10,000-.... बनने की राह है।

## श्रीमान व्हर्लपूल मैनेजर

*यहाँ प्रकाशित किया जा रहा पत्र अगस्त में लिखा गया था पर लगता है कि साहब को दिया नहीं। सड़क पर 'मजदूर समाचार' लेते समय एक मजदूर ने अक्टूबर में हमें यह दिया।*

सेवा में मान्यवर महोदय मैनेजर साहब

•व्हर्लपूल ऑफ इण्डिया लिमिटेड, 28 इन्डस्ट्रीयल एरिया, फरीदाबाद-121001

महोदय, सविनय निवदेन है कि हम लोग आपकी कम्पनी में 10-12 साल से काम कर रहे हैं। ई.एस.आई. तो शुरू से ही कटती है लेकिन ई.एस.आई. नम्बर हमारे बराबर बदलते रहते हैं। इसलिये कार्ड भी कुछ खास लोगों को ही मिला है। सब के पास ई.एस.आई. कार्ड भी नहीं है।

सन् 1998 से हम लोगों का फण्ड (भविष्य निधि) भी कटना शुरू हो गया था और आज भी कटता है। शुरू-शुरू में एक-एक आदमी का 1500-1500 रुपये तक काटा गया और आज हर महीने कम से कम 250 रुपये कट जाता है। लेकिन आज तक हम लोगों को उसकी स्लिप प्राप्त नहीं हुई है।

वर्दी और जूतों के लिये 4-5 बार नाप-तौल करके ले गये। लेकिन आज तक न तो जूते मिले और न किसी को वर्दी मिली।

बोनस कभी नहीं मिला। माँगने पर आदमियों को बाहर कर दिया जाता है। जान से मारने की धमकी तक दी गई है। कई लोगों को बाहर निकाल दिया गया है। फण्ड का फार्म भरा गया लेकिन आज तक उनका फण्ड भी नहीं निकला। वे आज भी बाहर घूम रहे हैं।

ये सारी समस्यायें लोजिस्टिक डिपार्टमेन्ट में दो ठेकेदारों से हैं। उनके नाम कादर खान और श्रीवास्तव हैं। इसलिये हम लोग आप से बड़ी उम्मीद रखते हुये आशा करते हैं कि आप मसीहा बन कर हमारी सारी समस्यायें दूर करेंगे।

आपकी अति कृपा होगी। धन्यवाद।

आपका, सारा लोडिंग डिपार्टमेन्ट

ये सारी समस्यायें तो पीछे की बातें हैं। नई समस्या ये है कि बाहर जो काम कादर खान और श्रीवास्तव के ठेकों में नहीं है वह भी करवाते हैं और जबरन कमीशन लेते हैं। वह भी कमीशन के तौर पर सौ सो नहीं बल्कि पूरी रकम ही रख लेते हैं।

**लोडिंग डिपार्टमेन्ट के सब मजदूर**

विचारणीय

## आतंकवाद

डर-दहशत के बिना किसी को भी दास-दासी भूदास-चौथ देने वाली, मजदूर नहीं रखा जा सकता। गुलामी, बेगार और मजदूरी-प्रथा जिसमें दो के बदले सौ का उत्पादन करवाया जाता है को बनाये रखने के लिये लोगों को आतंकित रखना एक अनिवार्य आवश्यकता है। मनुष्यों में से स्वामी और दास का बनना अपने संग आतंक के औजार के रूप में राजसत्ता को, सरकार को लाया था।

दमन-शोषण के मुख्य रक्षक, सरकारी-तन्त्र की घातकता आतंकित रखने की लगातार बढती जरूरत की पूर्ति के लिये सतत् बढती आई है। खुले तौर पर आतंकी पुलिस-फौज की विशाल सँख्या के संग-संग व्यापक खुफिया-तन्त्र हर देश में अब जनता को रौंद रहे हैं। आज पृथ्वी के हर क्षेत्र में सामान्यजन आतंक के साये में घुट-घुट कर दिन काट रहे हैं।

मात्र भय कारगर नहीं होता। सिर्फ लालच पर्याप्त नहीं होता। इसलिये अपने आतंक तथा आतंकवादी-तन्त्र को न्यायसंगत ठहराने और आम लोगों का समर्थन-सहमति प्राप्त करने के लिये सरकारें नित नये प्रपंच रचती हैं। आतंकवाद का एकाधिकार लिये सरकारें अपने वेतनभोगी गुप्त-तन्त्र के विभिन्न विभागों द्वारा गुपचुप आतंकी कार्रवाइयाँ करवा कर खुले आतंकवाद के वास्ते पुलिस-फौज के लिये जनता से समर्थन की जुगाड़ लगाती रहती हैं। सरकारों के खुफिया-तन्त्र स्वयं गोपनीय हरकतें करने के संग-संग "अपराधी गिरोहों" से आतंकवादी कार्य करवाते हैं ताकि आम लोगों को पुलिस-फौज तथा खुफिया विभागों की आवश्यकता महसूस हो। और, कुटिल चाणक्य-कौटिल्य के ज्ञानी शिष्यों ने ज्ञान-तन्त्र के विकास के साथ कुटिलता में वह महारत हासिल कर ली है कि जानते हुये भी अनजान बन कर आज सरकारें अपने निर्देशन-नियन्त्रण से परे वाली कई आतंकवादी घटनाओं को होने देती हैं ताकि दमन-शोषण के मुख्य रक्षक, आतंकवादी सरकारी तन्त्र को सामान्यजन एक आवश्यक बुराई के तौर पर तो स्वीकार करें ही करें।

आज हर देश में 95-98 प्रतिशत आतंक सरकारों के प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष आतंकवाद की वजह से है। सरकारों के निर्देशन-नियन्त्रण से परे का उल्लेखनीय आतंकवाद उन गिरोहों का होता है जो बीज-रूप में सरकार हैं और स्वयं को सरकार में बदलने को प्रयासरत हैं।

दमन-शोषण के खिलाफ आक्रोश में, गुस्से में किसी द्वारा आतंकवाद की राह अपनाना दमन-शोषण के जाल में फँसना और दमन-शोषण के तन्त्र को मजबूती देना लगता है। ■

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे० के० आफसैट दिल्ली से मुद्रित किया। **RN 42233** पोस्टल रजिस्ट्रेशन **L/HR/FBD/73**
सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी—546 नेहरू ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।